पैरिस में मस्ती होगी

अपने संगी साथियों और दर्शकों के बिना तोक्यो ओलंपिक में भाग लेने वाले खिलाड़ी अभी से पेरिस ओलंपिक की कल्पना करने लग गए हैं और उन्हें उम्मीद है कि 2024 में परिस्थितियां पूरी तरह से बदली होंगी और उन्हें ओलिंपिक माहौल में खुलकर जीने की छूट मिलेगी। खाली स्टेडियमों में खेलना पड़ा और जापान में कहीं भी घूमने नहीं दिया गया। यही वजह है कि खिलाड़ी अभी से पेरिस ओलंपिक के सपने देखने लग गए हैं।

चार नहीं तीन साल बाद अगला ओलिंपिक, पैरिस करेगा मेजबानी

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) तोक्यो। कोरोना वायरस और निकट आ रहे तूफान के बीच असाधारण ओलिंपिक खेलों का समापन हो गया। रंगीन रोशनी के फव्वारों के बीच आठ अगस्त को क्लोजिंग सेरेमनी में नाच–गाना और खुशियां मनाना सब हुआ। कोविड–19 महामारी के दौरान जान गंवाने वालों को याद करते हुए आगे बढ़ने के संदेश के साथ ओलिंपिक ध्वज पैरिस को सौंपा गया जहां अगले ओलिंपिक खेल तीन साल बाद आयोजित किए जाएंगे। तोक्यो के गर्वनर यूरिको कोइके ने ओलंपिक ध्वज बाक को सौंपा जिन्होंने इसे पैरिस की मेयर एने हिडाल्गो के सुपुर्द किया वैश्विक स्वास्थ्य संकट के कारण एक साल देरी, बढ़ती लागत और आयोजन को लेकर स्थानीय लोगों की विभाजित राय के बीच तोक्यो ओलिंपिक तमाम चुनौतियों को पार करते हुए समापन समारोह तक पहुंचे। तोक्यो में ओलिंपिक खेल उम्मीद, एकजुटता और शांति के ओलंपिक खेल थे। इन खेलों में लोग भावनाओं से जुड़े थे, वे खुशी और प्रेरणा के पलों को साझा कर रहे थे।

टोक्यो ओलिंपिक भारतीय हाकी में नई जान फूंकने वाला हुआ साबित

ओलिंपिक

हाकी में भारत को चार दशक के बाद ओलिंपिक पदक हासिल हुआ

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

नई दिल्ली। हाकी में भारत को चार दशक के बाद ओलिंपिक पदक हासिल हुआ। मनप्रीत की अगुआई वाली पुरुष हाकी टीम ने जर्मनी को 5–4 से हराकर कांस्य पदक अपने नाम किया तो रानी रामपाल की अगुआई वाली महिला टीम बेशक पदक जीतने से चूक गई, लेकिन उसने दिल जीतने में कोई कसर नहीं छोड़ी। दिग्गज भारतीय हाकी खिलाड़ियों का मानना है कि टोक्यो ओलिंपिक भारतीय हाकी में नई जान फूंकने वाला साबित हुआ। अब यहां से मेहनत की जाए तो भारतीय हाकी फिर से अपना पुराना गौरव और स्वर्णिम दौर वापस पा सकती है।

1964 टोक्यो ओलिंपिक में भारतीय हाकी टीम ने पाकिस्तान को हराकर स्वर्ण पदक जीता था। उस टीम में खेलने वाले गुरबक्श सिंह अब 85 साल के और हरबिंदर सिंह 78 साल के हो चुके हैं। गुरबक्श सिंह

कहते हैं, 40 साल से ज्यादा से हम ना तो विश्व कप और ना ही ओलिंपिक में कोई पदक जीत सके थे, लेकिन अब यह इंतजार खत्म हुआ। यह जीत हमारी हाकी को काफी ऊंचाई पर ले जाएगी। मेजर ध्यानचंद या फिर उसके बाद हमारे जमाने में टीवी नहीं था, लेकिन अब ना सिर्फ टीवी है, बल्कि तकनीक है, जिससे लोगों ने इस जीत का लुत्फ उठाया होगा। यह जीत हमारी नई पीढ़ी को प्रेरित करेगी और हमारी हाकी बेहतर से बेहतर होती जाएगी। वहीं, हरविंदर सिंह ने कहा, टोक्यो एक बार फिर भारत के लिए भाग्यशाली साबित हुआ। यह पदक भारत की हाकी में नया बदलाव लेकर आएगा। ये पदक देश के बच्चों को हाकी के प्रति आकर्षित करेगा और इस टीम को और अच्छा करने की प्रेरणा देगा। अब इस टीम का हर खिलाड़ी ओलिंपिक पदक विजेता कहलाएगा और ये अपने आप में गौरव की बात है।

1975 विश्व कप विजेता भारतीय हाकी टीम के कप्तान और दो बार ओलिंपिक कांस्य पदक जीतने वाली टीम के सदस्य अजित पाल सिंह ने कहा, 1980 में स्वर्ण जीतने के बाद से हम पदक के लिए तरस गए थे। बहुत मेहनत और मुश्किल से कई वर्षों के इंतजार के बाद अब हम फिर पोडियम पर पहुंचे हैं तो यह अहसास अपने आप में ही पुराने दिनों की याद दिलाने वाला है। 2008 बीजिंग ओलिंपिक के लिए क्वालीफाई नहीं करने के बाद से भारतीय हाकी में काफी मेहनत हुई है, लेकिन हमें यहीं नहीं रुकना चाहिए। अब कांस्य आ गया है, लेकिन स्वर्ण का इंतजार बना हुआ है और ये इंतजार भी खत्म हो, इसके लिए कुछ और क्षेत्र हैं जिन पर काम होना जरूरी है।

दुखद! ओलिंपिक मेडल का सपना संजोए किया था विदा

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

चेन्नई। तमिलनाडु की धावक धनलक्ष्मी जब तोक्यो के लिए रवाना हो रही थी, तब उनके आंखों में ख्वाब थे। सपना था कि देश को ओलिंपिक में मेडल दिलाए। आंखों का ख्वाब तो पूरा नहीं हुआ लेकिन स्वदेश लौटने के बाद ऐसा झटका लगा जिसे वह ताउम्र नहीं भूल पाएंगी। 22 वर्षीय इस ऐथीलट की बहन अब दुनिया में नहीं रही। घर आने के बाद जैसे ही उन्हें इसकी खबर लगी वह बुरी तरह टूट गईं।

12 जुलाई को हुई थी मौत: एथलेटिक्स में 4Û400m मिक्स्ड रिले टीम का हिस्सा रही धनलक्ष्मी तिरुचिरापल्ली के नजदीक गुंडूर गांव की रहने वाली हैं। इवेंट्स खत्म होने के

बाद जब वह रविवार को तोक्यो से वापस लौटीं तब घरवालों ने इस दुखद खबर के बारे में बताया। परिजन नहीं चाहते थे कि गायत्री की मौत की खबर धनलक्ष्मी को पता लगे, क्योंकि अगर ऐसा होता तो वह अपने खेल पर फोकस नहीं कर पाती।

बचपन में ही सिर से उठ गया पिता का साया: धनलक्ष्मी की उम्र बमुश्किल 10 साल रही होगी, जब उनके पिता का निधन हो गया। दिहाड़ी मजदूरी करके मां ने परिवार पाला। स्थानीय न्यूज चैनल से बातचीत में मां कहती हैं कि दोनों बहनों में बेहद प्यार था। गायत्री ही धनलक्ष्मी को हमेशा मोटिवेट करती, लेकिन अब सब खत्म हो गया।

तोड़ा था पीटी उषा का रेकॉर्ड चयन ट्रायल्स के दौरान धनलक्ष्मी ने बेहतरीन खेल दिखाया था। एनआईएस पटियाला में उन्होंने पीटी उषा के राष्ट्रीय 200 मीटर हीट्स के रेकॉर्ड को तोड़ा था। पीटी उषा ने 23 साल पहले 23.30 सेकेंड का समय निकाल था, जिसे अब धनलक्ष्मी ने 23.26 के साथ सुधारा। साथ ही 100 मीटर में 11. 39 के समय के साथ दुती चंद को हराकर गोल्ड भी जीता था।

भारत की जीत पर बारिश ने फेरा पानी, पहला मैच हुआ ड्रॉ

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

नई दिल्ली। ट्रेंट ब्रिज में भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टेस्ट सीरीज का पहला मैच खेला गया। इस मैच में भारत को जीत के लिए दूसरी पारी में 209 रन का टारगेट मिला था। टीम इंडिया ने चौथे दिन का खेल खत्म होने तक एक विकेट के नुकसान पर 52 रन बना लिए थे और उसे मैच के पांचवें दिन जीत के लिए 157 रन बनाने थे। बारिश की वजह से पांचवें दिन एक भी गेंद नहीं फेंकी जा सकी और दिन का खेल रद कर दिया गया। दिन का खेल रद किए जाने की वजह से ये मैच ड्रॉ हो गया। इस मैच में इंग्लैंड के कप्तान जो रूट को उनकी शतकीय पारी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया।

इस मैच में टीम इंडिया के पास जीत का शानदार मौका था और अगर खेल होता तो भारतीय टीम के जीतने की पूरी संभावना थी, लेकिन बारिश ने भारत की जीत पर पानी फेर दिया। हालांकि इंग्लैंड की टीम की पांचवें दिन खेल नहीं होने की वजह से बल्ले–बल्ले हो गई और वो अपनी पहली हार से बच गए।

न्यूज डायरी

पांच खिलाड़ी जिन्होंने किया निराश, वरना मेडली टैली में और आगे होता भारत

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) तोक्यो। जब पूरी दुनिया कोरोना वायरस से जूझ रही थी, उस वक्त 11500 खिलाड़ी और 60 हजार से ज्यादा अधिकारी, एडमिनिस्ट्रेटर और मीडियाकर्मी एक शहर में जमा हुए। जानलेवा महामारी से खुद को बचाने की चुनौती थी। मगर बेहतरीन शुरुआत के बाद शानदार अंदाज में इसका अंत भी हुआ। नाच–गाने और रंगारंग कार्यक्रम के साथ आठ अगस्त को हुई क्लोजिंग सेरेमनी में पहलवान बजरंग पूनिया ध्वज वाहक थे। भारत के लिए यह ओलिंपिक खेल ऐतिहासिक रहे। एक गोल्ड, दो सिल्वर और चार ब्रॉन्ज मेडल के साथ भारत ने अपने ओलिंपिक अभियान का अंत सात पदकों के साथ किया। जैवलीन थ्रोअर नीरज चोपड़ा ने स्वर्णिम भाला फेंका। पहलवान रवि दहिया, वेटलिफ्टर मीराबाई चानू ने रजत जीता तो शटलर पीवी सिंधु, बॉक्सर लवलीना, पहलान बजरंग पूनिया और भारतीय मेंस हॉकी टीम ने ब्रॉन्ज मेडल अपने नाम किया। यह खेलों के महाकुंभ में भारत की ओर से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन भी है, इससे पहले लंदन 2012 में भारत ने छह मेडल जीते थे।

केएल या जडेजा नहीं इस खिलाड़ी को नॉटिंघम टेस्ट में बताया शानदार

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) नई दिल्ली। भारत और इंग्लैंड के बीच खेली गई पांच मैचों की टेस्ट सीरीज का पहला मैच बारिश की भेंट चढ़ गया। मैच के आखिरी दिन एक भी गेंद नहीं फेंकी जा सकी जिसने भारतीय टीम के जीत की उम्मीदों पर पानी फेर दिया। चौथे दिन भारत ने इंग्लैंड से मिले 209 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए 1 विकेट पर 52 रन बना लिए थे। जीत के लिए भारत को 157 रन की जरूरत थी लेकिन मैच ड्रॉ हो गया। पूर्व पाकिस्तानी कप्तान सलमान बट्ट ने भारतीय विकेटकीपर रिषभ पंत की जमकर तारीफ की है। उन्होंने कहा, रिषभ पंत काफी ज्यादा तारीफ के हकदार हैं। इंग्लैंड में विकेटकीपिंग करना बहुत ही ज्यादा मुश्किल होता है और वह काफी ज्याद शानदार रहे। उन्होंने जैस क्राउले और डॉम सिब्ले का कैच पकड़ उनको वापस भेजा। यह काम बिल्कुल भी आसान नहीं था क्योंकि काफी गेंद उनको सामने आकर गिरी थी।

पहले टेस्ट से भारत की टीम को मिलेगा ये फायदा

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) नॉटिंघम। भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज दिनेश कार्तिक इस समय भारत और इंग्लैंड के बीच जारी पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में एक कमेंट्री पैनल का हिस्सा हैं। इसी दौरान उन्होंने टेस्ट सीरीज का पहला मुकाबला ड्रॉ होने के बाद कहा है कि ट्रेंट ब्रिज टेस्ट के बाद भारत का पलड़ा दूसरे टेस्ट मैच से पहले भारी है। कार्तिक के मुताबिक, ट्रेंट ब्रिज में खेला गया पहला टेस्ट बेशक ड्रॉ रहा, लेकिन मेजबान टीम को भारतीय टीम के समक्ष काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। स्काई स्पोर्ट्स से बात करते हुए दिनेश कार्तिक ने कहा, ष्खेल के चौथे दिन भारतीय टीम का पलड़ा भारी रहा। इस टेस्ट मैच में इंग्लैंड के मुकाबले भारत को काफी कुछ सीखने को मिला। पूरे टेस्ट के दौरान मेहमान टीम ने शानदार प्रदर्शन किया। भारतीय गेंदबाजो ने अपना इरादा वहीं साफ कर दिया था।

इंग्लैंड पर जीत का शानदार मौका था: विराट कोहली

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) नॉटिंघम। इंग्लैंड के खिलाफ यहां ट्रेंट ब्रिज में खेले गए पहले टेस्ट मुकाबले के पांचवें और आखिरी दिन का खेल बारिश के कारण बाधित रहने की वजह से मैच ड्रॉ पर समाप्त होने के बाद भारतीय कप्तान विराट कोहली ने कहा है कि टीम को पता था कि आज उनके पास जीतने का अवसर है। इंग्लैंड ने भारत को 209 रनों का लक्ष्य दिया था और टीम इंडिया ने चौथे दिन का खेल समाप्त होने तक एक विकेट पर 52 रन बनाए थे तथा उसे जीत के लिए और 157 रनों की जरूरत थी। पांचवें दिन का खेल बारिश की भेंट चढ़ गया और भारत की जीतने की संभावना धूमिल हो गई।